श्रमण शतक

लेखक

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पी-एच.डी., डी-लिट्

प्रकाशक

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर-302 015

फोन : 0141-2707458, 2705581

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

प्रथम संस्करण :
5 हजार
(6 अप्रैल, 2019 ई.)
नवसंवत्सर

मूल्य : **4 रुपये**

टाइपसैटिंग :
त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स,
ए-4, बापूनगर, जयपुर

मुद्रक :
रैनवो ऑफसेट प्रिंटर्स
बाईस गोदाम, जयपुर

प्रस्तुत संस्करण की कीमत कम करनेवाले दातारों की सूची

1.	श्रीमती लक्ष्मी जैन, दिल्ली	1100.00
2.	श्रीमती पुष्पलता जैन (जीजीबाई) ध.प. अजितकुमारजी जैन, छिन्दवाड़ा	1000.00
3.	श्री हेमन्त बेलोकर, ढशाला	1000.00
4.	श्री नरेन्द्रकुमार जैन, मडदेवरा	500.00
	कुल राशि	**3,600.00**

प्रकाशकीय

जैनधर्म के निष्णेता विद्वान् तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की लेखनी से प्रसूत 'श्रमण शतक' का प्रकाशन करते हुए संस्था अपने आपको गौरवान्वित अनुभव कर रही है। यहाँ यह स्मरणीय है कि गद्य लेखन में तो आपको महारत हासिल है ही, पद्य लेखन के क्षेत्र में भी आपका कोई सानी नहीं है। 'पश्चाताप' खण्ड काव्य तथा 'वैराग्य' जैसे महाकाव्यों की रचना के उपरान्त दिगम्बर जैन समाज के सर्वमान्य आचार्य कुन्दकुन्द प्रणीत पंचपरमागमों पर समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, अष्टपाहुड़ तथा पंचास्तिकाय महामण्डल विधान की रचना के उपरान्त योगसार व द्रव्यसंग्रह महामण्डल विधान की रचना कर आपने सभी को हत्प्रभ कर दिया है।

पिछले कुछ दिनों आप काफी अस्वस्थ्य रहे, परन्तु आपका चिन्तन नहीं रुका। पंचपरमेष्ठियों का स्मरण सदा आपके चिन्तन में रहा। यही कारण है कि जैसे ही आपके हाथ में कलम उठाने की शक्ति आई आप तत्काल 'श्रमण शतक' की रचना करने बैठ गए और २-५ दिन में ही इसे पूरा करके ही दम लिया। यह कृति है तो छोटी परन्तु इसने गागर में सागर भर दिया है। श्रमणों के स्वरूप पर आपने जो कुछ भी लिखा अद्भुत है और 'सतसैया के दोहरे ज्यों नाविक के तीर, देखत में छोटे लगें घाव करें गंभीर' कहावत को चरितार्थ करते प्रतीत हो रहे हैं।

आपकी महत्वपूर्ण कृतियाँ धर्म के दशलक्षण, क्रमबद्धपर्याय, बारह भावना : एक अनुशीलन, परमभावप्रकाशक नयचक्र, चैतन्यचमत्कार, निमित्तोपादान, पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव, शाश्वत तीर्थधाम : सम्मेदशिखर, शाकाहार : जैनदर्शन के परिप्रेक्ष्य में, आत्मा ही है शरण और गोम्मटेश्वर बाहुबली : एक नया चिन्तन आदि प्रमुख हैं।

अब तक आपके साहित्य पर तीन छात्रों ने शोधकार्य किया है - जिनमें डॉ. महावीरप्रसाद जैन ने 'डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल : व्यक्तित्व और कर्तृत्व' विषय पर और डॉ. सीमा जैन ने 'डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के साहित्य का समालोचनात्मक अनुशीलन' विषय पर मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर से तथा डॉ. राजेन्द्र संगवे द्वारा मद्रास विश्वविद्यालय से 'डॉ. हुकमचंद भारिल्ल की गद्य विधाओं में जैनदर्शन' विषय पर पी-एचडी की उपाधि प्राप्त की है।

इसके साथ ही अरुणकुमार जैन ने 'डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल और उनका कथा साहित्य', नीतू चौधरी द्वारा 'शिक्षा शास्त्री परिप्रेक्ष्य में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन', ममता गुप्ता द्वारा 'धर्म के दशलक्षण : एक अनुशीलन' तथा शिखरचन्द जैन ने 'डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व' विषय पर लघु शोध प्रबन्ध लिखे हैं जो आपके साहित्यिक अवदान के जीवन्त दस्तावेज हैं।

आपके उक्त कार्य में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील तथा अच्युतकान्त शास्त्री का भी महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा है। सुन्दर टाईप सैटिंग के लिए श्री कैलाशचन्द शर्मा तथा आकर्षक मुखपृष्ठ और प्रकाशन के लिए श्री अखिल बंसल के सहयोग हेतु आप सभी धन्यवाद के पात्र हैं।

श्रमण शतक के हार्द को समझकर आप सभी मुनियों के सच्चे स्वरूप का चिन्तन-मनन कर मोक्षमार्ग प्रशस्त करें - इसी मंगल भावना के साथ विराम लेता हूँ।

५ अप्रैल २०१९ ई. **- ब्र. यशपाल जैन,** प्रकाशन मंत्री

डॉ. भारिल्ल के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

१. समयसार : ज्ञायकभावप्रबोधिनी टीका ५०.००
२-६. समयसार अनुशीलन भाग १ से ५ १२५.००
७. समयसार का सार ३०.००
८. गाथा समयसार १०.००
९. प्रवचनसार : ज्ञानज्ञेयतत्त्वप्रबोधिनी टीका ५०.००
१०-१२. प्रवचनसार अनुशीलन भाग १ से ३ ९५.००
१३. कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन २०.००
१४. प्रवचनसार का सार ३०.००
१५. नियमसार : आत्मप्रबोधिनी टीका ५०.००
१६-१७. नियमसार अनुशीलन भाग १ से ३ ७०.००
१८. छहढाला का सार १५.००
१९. मोक्षमार्गप्रकाशक का सार ३०.००
२०. वैराग्य महाकाव्य २५.००
२१. समयसार महामण्डल विधान २५.००
२२. समयसार महामण्डल विधान (गाथा सहित) ३५.००
२३. प्रवचनसार महामण्डल विधान २०.००
२४. प्रवचनसार महामण्डल विधान (गाथा सहित) २०.००
२५. नियमसार महामण्डल विधान २५.००
२६. नियमसार महामण्डल विधान (गाथा सहित) ३०.००
२७. अष्टपाहुड़ महामण्डल विधान २५.००
२८.दर्शन-सूत्र-चारित्रपाहुड़ मण्डल विधान १०.००
२९. बढ़ते कदम १०.००
३०. ४७ शक्तियाँ और ४७ नय १५.००
३१. पंडित टोडरमल व्यक्तित्व और कर्तृत्व २०.००
३२. परमभावप्रकाशक नयचक्र ४०.००
३३. चिन्तन की गहराइयाँ ३०.००
३४. तीर्थंकर महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ २५.००
३५. धर्म के दशलक्षण २०.००
३६. क्रमबद्धपर्याय २०.००
३७. तत्त्वार्थमणिप्रदीप (पूर्वार्द्ध) २०.००
३८. तत्त्वार्थमणिप्रदीप (उत्तरार्द्ध) १०.००
३९. तत्त्वार्थमणिप्रदीप (सम्पूर्ण) ३०.००
४०. बिखरे मोती १६.००
४१. सत्य की खोज २५.००
४२. अध्यात्म नवनीत १५.००
४३. आप कुछ भी कहो १५.००
४४. आत्मा ही है शरण १५.००
४५. सुक्ति-सुधा १८.००
४६. बारह भावना : एक अनुशीलन १६.००
४७. दृष्टि का विषय १०.००
४८. गागर में सागर ७.००
४९. पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव १२.००
५०. णमोकार महामंत्र : एक अनुशीलन १५.००
५१. रक्षाबन्धन और दीपावली ५.००
५२. आचार्य कुंदकुंद और उनके पंचपरमागम ५.००
५३. युगपुरुष कानजीस्वामी ५.००
५४. वीतराग-विज्ञान प्रशिक्षण निर्देशिका २०.००
५५. योगसार अनुशीलन २५.००
५६. योगसार महामण्डल विधान ८.००
५७. द्रव्यसंग्रह महामण्डल विधान ७.००
५८. मैं कौन हूँ ११.००
५९. रहस्य : रहस्यपूर्ण चिट्ठी का १०.००
६०. निमित्तोपादान ८.००
६१. अहिंसा : महावीर की दृष्टि में ५.००
६२. मैं स्वयं भगवान हूँ ५.००
६३-६४. ध्यान का स्वरूप/रीति-नीति ४.००
६५. शाकाहार ५.००
६६. भगवान ऋषभदेव ४.००
६७. तीर्थंकर भगवान महावीर ३.००
६८. चैतन्य चमत्कार ४.००
६९. गोली का जवाब गाली से भी नहीं २.००
७०. गोम्मटेश्वर बाहुबली २.००
७१. वीतरागी व्यक्तित्व : भगवान महावीर २.००
७२. अनेकान्त और स्याद्वाद ३.००
७३. शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखर ६.००
७४. बिन्दु में सिन्धु २.५०
७५. जिनवरस्य नयचक्रम १०.००
७६. पश्चात्ताप खण्डकाव्य १०.००
७७. बारह भावना एवं जिनेन्द्र वंदना २.००
७८. कुंदकुंदशतक पद्यानुवाद २.५०
७९. शुद्धात्मशतक पद्यानुवाद १.००
८०. समयसार पद्यानुवाद ३.००
८१. योगसार पद्यानुवाद १.००
८२. समयसार कलश पद्यानुवाद ३.००
८३. प्रवचनसार पद्यानुवाद ३.००
८४. द्रव्यसंग्रह पद्यानुवाद १.००
८५. अष्टपाहुड़ पद्यानुवाद ३.००
८६. नियमसार पद्यानुवाद २.५०
८७. नियमसार कलश पद्यानुवाद ५.००
८८. सिद्धभक्ति १०.००
८९. अर्चना जेबी १.५०
९०. कुंदकुंदशतक (अर्थ सहित) ५.००
९१. शुद्धात्मशतक (अर्थ सहित) ५.००
९२-९३. बालबोध पाठमाला भाग २ से ३ ८.००
९४-९५. वीतराग विज्ञान पाठमाला १ से ३ १५.००
९६-९७. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग १ से २ १२.००
९८. भगवान महावीर और उनकी जन्मभूमि ३.००
९९. समाधिमरण या सल्लेखना ५.००
१००. ये है मेरी नारियाँ ५.००

डॉ. भारिल्ल पर प्रकाशित साहित्य

१. तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल (अभिनंदन ग्रंथ) १५०.००
२. डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल : व्यक्तित्व और कृर्तत्व - डॉ. महावीरप्रसाद जैन ३०.००
३. डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल और उनका कथा साहित्य ह्न अरुणकुमार जैन १२.००
४. डॉ. भारिल्ल के साहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन - अखिल जैन बंसल २५.००
५. गुरु की दृष्टि में शिष्य ५.००
६. मनीषियों की दृष्टि में : डॉ. भारिल्ल ५.००
७. डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के साहित्य का समालोचनात्मक अनुशीलन ह्न सीमा जैन २५.००

प्रकाशनाधीन

१. शिक्षाशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन ह्न नीतू चौधरी
२. डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व ह्न शिखरचन्द जैन
३. धर्म के दशलक्षण एक अनुशीलन ह्न ममता गुप्ता

श्रमण शतक

(दोहा)

श्रमण परम्परा के जनक, भवसागर के पार।
श्रमण शिरोमणि ऋषभ जिन, वन्दन बारम्बार।। १।।

श्रमण संस्कृति के प्रमुख, भवसागर के तीर।
कोटि-कोटि वन्दन करूँ, महाश्रमण महावीर।। २।।

महावीर पथ के पथिक, जिनके भव का अन्त।
श्रमण संस्कृति में रंगे, नग्न दिगम्बर सन्त।। ३।।

अपने में अपनत्व है, अपने में स्वाधीन।
सहज सरल पथ के पथिक, अपने में ही लीन।। ४।।

जिनकी जीवनधार में, श्रम का न हो लेश।
नख से शिख तक श्रमण के, नग्न दिगम्बर वेश।। ५।।

श्रम आश्रम दोनों नहीं, अपने में ही मग्न।
केवल अपनी साधना में रहते हैं संलग्न।। ६।।

आश्रम घर का रूप है, घरत्यागी मुनिराज।
श्रमणों के घर हो नहीं, भाषी श्री जिनराज।। ७।।

घर मकान का रूप है, आश्रम होय मकान।
गृहत्यागी कैसे रखे, आश्रम रूप मकान।। ८।।

जिसमें श्रम का नाम ना, वह श्रमणों का पंथ।
श्रम न श्रम न श्रमण हैं, श्रमणों का शिवपंथ।। ९।।

श्रम आकुलतारूप है, कष्टरूप दुखरूप।
कष्टरूप श्रम किसतरह, होवे श्रमणस्वरूप।। १०।।

उनको कहते हैं श्रमिक, जो श्रम करते नित्य।
श्रमिक श्रमण होते नहीं, यह परिपूरण सत्य।। ११।।

कुछ करने का भार जब, जिनके शिर ना आज।
उन्हें श्रमिक कैसे कहें, वे तो शिर के ताज।। १२।।

श्रमिक बताना श्रमण को, श्रमणों का अपमान।
श्रमण संत भवि नित करो, श्रमणों का सन्मान।। १३।।

सहजभाव से सहज ही, सहज परिणमन होय।
यही सहजता धर्म है, इसमें श्रम न होय।। १४।।

सहजभाव से प्रगट हो, सहजानन्द अपार।
जिसमें श्रम अनुभव न हो, वह है श्रमणाचार ।। १५।।

श्रम न हो का अर्थ है, सहज होय आचार।
जो तनाव से रहित हो, वह है श्रमणाचार।। १६।।

सहज आचरण श्रम रहित, सहजानन्द स्वरूप।
श्रम दुख का ही रूप है, श्रम है खेदस्वरूप।। १७।।

श्रम जल से होते रहित, महाश्रमण जिनराय।
श्रम तो खेद स्वरूप है, श्रम दुख की पर्याय।। १८।।

---

१. न = नहीं

सहज शान्त मुनिराज को सहज थकावनहार।
श्रम से क्या है प्रयोजन, वे तो सदाबहार।। १९।।

श्रम ण[१] श्रम ण श्रमण हैं, महाश्रमण जिनराज।
ज्ञान–ध्यान तप लीन मुनि, श्रमणों में सरताज।। २०।।

जिनका जीवन सहज है, अनुद्दिष्ट आहार।
सहज सावधानी रहे, सरल सत्य व्यवहार।। २१।।

पर में कुछ करना नहीं, पूर्ण अकर्त्ताभाव।
अपने में भी है नहीं, परिवर्तन का भाव।। २२।।

जब कुछ करना है नहीं, सहज–सहज स्वीकार।
श्रम को ना अवकाश है, श्रम ना है स्वीकार।। २३।।

रंच मात्र भी श्रम नहीं, सहज श्रमण मुनिराज।
सहज शान्त आनन्द में, विचरे श्री ऋषिराज।। २४।।

शारीरिक श्रम है नहीं, है पूरा विश्राम।
ज्ञान–ध्यान को छोड़कर अन्य न कोई काम।। २५।।

विचरण में भी श्रम नहीं, शक्ति के अनुसार।
भूमि शोधकर निस्पृही सीमित करें विहार।। २६।।

जाने की जल्दी नहीं, श्रम से रहित विहार।
एक आत्मा ही रहे, चिन्तन का आधार।। २७।।

कोइ किसी का न करे अर अपनी पर्याय।
जो जब जैसी हो प्रभो सभी सहज स्वीकार।। २८।।

उसमें भी बदलाबदल करने का न भाव।
जब कुछ करना ही नहीं, श्रम का सहज अभाव।। २९।।

नग्न दिगम्बर श्रमणजन, भविजन तारणहार।
भविजीवों को मुक्तिमग, सदा बतावनहार।। ३०।।

मुक्तिमार्ग श्रमरूप न, वह है आनन्दरूप।
सहजरूप सुखरूप है, सहजानन्द स्वरूप।। ३१।।

मुक्तिमार्ग थित संतजन, रहें सदा सन्तुष्ट।
साम्यभाव सबसे रखें, रुष्ट होंय न तुष्ट।। ३२।।

जो कुछ है या हो रहा, सबमें समताभाव।
जिनके है वे सन्तजन, सदा जगावनहार।। ३३।।

जब कोई अनुकूल ना, कोई ना प्रतिकूल।
इष्ट-अनिष्ट की कल्पना, कैसे हो उद्भूत।। ३४।।

जब सब में समभाव है, सब ही हैं समरूप।
किस को मानें इष्ट हम, और अनिष्ट स्वरूप।। ३५।।

कोई वस्तु है नहीं, इष्टानिष्ट स्वरूप।
राग-द्वेष कैसे करें, सब वस्तु समरूप।। ३६।।

राग-द्वेष के वास्ते, नहीं कोई अवकाश।
इसको कहते सन्तजन, सबमें समताभाव।। ३७।।

सन्तों की सम्पत्ति यह, साम्यभाव समरूप।
सन्तों की यह सम्पदा, है समभाव स्वरूप।। ३८।।

यह समभाव स्वभाव है, यह ही समताभाव।
राग-द्वेष के परिणमन का हो पूर्ण अभाव।। ३९।।

सहजभाव से प्राप्त हो, ऐसा समताभाव।
समताभाव प्रभाव से, साम्यभाव समभाव।। ४०।।

वीतरागमय भाव से, प्रगटे सहजानन्द।
सहज शान्ति की प्राप्ति हो, प्रगटे परमानन्द।। ४१।।

सहज शान्ति सुखमयदशा, परमानन्द अपार।
मुक्तिरूप यह भाव ही, मुक्ति मिलावनहार।। ४२।।

मुनिवर का सुख शान्तिमय, यही भाव समभाव।
साम्यभाव भी यही है, यह है समताभाव।। ४३।।

साम्यभाव के धनी हैं, सभी श्रमण भगवन्त।
समझो उनके आ गया, भवसागर का अन्त।। ४४।।

सम्यग्दृष्टि जीव सब, निर्भय हों निशंक।
उन्हें प्रभावित न करें, आशंका आतंक।। ४५।।

सभी द्रव्य स्वाधीन हैं, स्वयं परिणमित होंय।
अर अपने परिणमन के, कर्त्ता-धर्त्ता होंय।। ४६।।

जब जो कुछ जिस द्रव्य का, जैसा होना होय।
तब तैसा उस द्रव्य का, सदा परिणमन होय।। ४७।।

अरे सुनिश्चित है सभी, जाना है जिनदेव।
सब द्रव्यों का परिणमन, होता है स्वयमेव।। ४८।।

सब द्रव्यों के परिणमन, सभी ज्ञान के ज्ञेय।
सर्वज्ञों के प्रतिसमय, बनते हैं स्वयमेव।। ४९।।

अल्पज्ञों के भी नियत, होते हैं सब ज्ञेय।
स्वसमय अनुसार ही, वे ही बनते ज्ञेय।। ५०।।

उनमें भी बदलाबदल, ना हो किसीप्रकार।
जो होना है जो नियत, होगा उसीप्रकार।। ५१।।

महिमा केवलज्ञान की, जग में अपरंपार।
वह अनन्त आनन्दमय, महके सदाबहार।। ५२।।

सभी द्रव्य पर्यय सहित, सुगुण अनन्तानन्त।
नित्य असंख्य प्रदेशमय, झलकें उसमें नित्य।। ५३।।

स्व स्वभाव गुण धर्ममय, शक्ति अनन्तानन्त।
इनको जाने जीव जो, पावे भव का अन्त।। ५४।।

तीन काल के समय सम इक गुण की पर्याय।
जो-जो हों जिस-जिस समय, जानें सब जिनराय।। ५५।।

जो होनी है जिस समय, उसी समय वह होय।
कितनी भी कोशिश करो, टस-से-मस ना होय।। ५६।।

जिसका है श्रद्धान यह, उसके भव का अन्त।
ऐसी श्रद्धावान के, भव ना होय अनन्त।। ५७।।

सौ इन्द्रों के सामने, भाषी श्री भगवन्त।
इसमें संशय रंच ना, मान करो भव अन्त।। ५८।।

यदि चाहो इस भव विषैं, सन्तों जैसी शान्ति।
स्वीकारो इस सत्य को, रखो ना मन में भ्रांति।। ५९।।

परम सत्य की स्वीकृति, परम सत्य का ज्ञान।
परम सत्य की साधना, परमानन्द महान।। ६०।।

जो-जो केवलज्ञान में, झलक रहा है नित्य।
उसे जानकर मानकर, दिखलाओ भव्यत्व।। ६१।।

पर्यय किसकी कब कहाँ, जानें केवलज्ञान।
फेर-फार संभव नहीं, भाषी श्री भगवान।। ६२।।

भूतकालवत् जानिये, आगामी पर्याय।
भी स्वकाल में होत है, फेर-फार ना थाय।। ६३।।

अदल-बदल कुछ भी नहीं, ना जल्दी ना देर।
कुछ भी संभव है नहीं, हेर-फेर-अन्धेर।। ६४।।

जिस गुण में जिस द्रव्य में, जब-जब जो-जो होय।
रे अनादि से अन्त तक, सभी सुनिश्चित होय।। ६५।।

कोई क्यों बदले अरे, सहज द्रव्य की चाल।
सहज भाव से परिणमन, क्यों न हो स्वीकार।। ६६।।

द्रव्यों के परिणमन में, हस्तक्षेप का भाव।
अनुचित है अन्याय है, है विभावमय भाव।। ६७।।

कोई किसी का क्यों करें, क्यों हो ऐसा भाव।
ऐसा हो सकता नहीं, रे-रे वस्तु स्वभाव।। ६८।।

फेरफार की कल्पना, है आकुलता रूप।
सब जग जाने बात यह, आकुलता दुखरूप।। ६९।।

जबतक यह बेहोश[१] था, तबतक किया न रंच।
अब जब आया होश[२] में, तब क्यों करे प्रपंच।। ७०।।

जब से आया होश में, तब से उठें विकल्प।
करूँ बदल दूँ वस्तु को, विकलप उठें अनल्प।। ७१।।

वस्तु विकल्पातीत है, और विकल्प अनल्प।
इसीलिये ना हो रहा, यह आतम अविकल्प।। ७२।।

फेर-फार संभव नहीं, पर फेर-फार के भाव।
अरे निरन्तर हो रहे, जिनका आर-न-पार।। ७३।।

सब विकल्प हैं निरर्थक, रे उनके अनुसार।
वस्तु कभी ना परिणमें, हैं वे सब बेकार।। ७४।।

पर कर्मों का बंध तो, हो उनके अनुसार।
अतः कहे हैं अनर्थक, अपने लिये हजार।। ७५।।

जिसका जैसा परिणमन, होनहार अनुसार।
वह वैसा ही होयगा, भव्य करो स्वीकार।। ७६।।

सहज स्वीकृति धर्म है, सहज ज्ञान सद्ज्ञान।
सहज आचरण चरण है, होवे केवलज्ञान।। ७७।।

जो कुछ जैसा हो रहा, करो सहज स्वीकार।
यही सहजता धर्म है, सहजानन्द अपार।। ७८।।

सब कुछ नक्की सहज ही, नहीं कोई करतार।
यही अकर्त्ताभाव है, शिवमग का आधार।। ७९।।

१. निगोद से लेकर असैनी पंचेन्द्रिय तक। २. सैनी पंचेन्द्रिय हुआ।

दर्शन-ज्ञान-चरित्र सब, शिवमग के आधार।
सहज भाव से प्रगट हो, सहजानन्द अपार।। ८०।।

सहज ज्ञान दर्शन सहज, सहज चरण ही सार।
सहजध्यान सहजात्म का, सहजानन्द अपार।। ८१।।

सहज सहजता सहज ही, दर्शन-ज्ञान अनन्त।
सहज परिणमन सहज में, होवे भव का अन्त।। ८२।।

सहज परिणमन धर्म है, सहज परिणमन सार।
सहज स्वभावी वस्तु ही, जीवन का आधार।। ८३।।

सभी वस्तुयें सहज हैं, सब में शक्ति अनन्त।
सभी निरन्तर परिणमें, सभी अनादि-अनन्त।। ८४।।

सहज परिणमन की धनी, सभी वस्तुयें नित्य।
अर अनित्य भी हैं सभी, सब है नित्यानित्य।। ८५।।

निज स्वभाव छोड़े नहीं, अतः सभी हैं नित्य।
और निरन्तर परिणमें, कहते उन्हें अनित्य।। ८६।।

बदलें पर बदलें नहीं, बदलाबदली रूप।
दोनों वस्तु स्वभाव हैं, वस्तुस्वरूप अनूप।। ८७।।

नहीं बदलना द्रव्य का, है यह नित्य स्वभाव।
अरे निरन्तर बदलना, है पर्याय स्वभाव।। ८८।।

द्रव्य और पर्याय हैं, दोनों वस्तुस्वभाव।
वस्तु दोनों रूप है, दोनों का सद्भाव।। ८९।।

नहीं बदलना वस्तु का, जैसा द्रव्य स्वभाव।
नित्य बदलना वस्तु का, है पर्याय स्वभाव।। ९०।।

एक समय इक साथ ही, बदलाबदली होय।
ज्ञानीजन अनुभव करें, इसमें शक न कोय।। ९१।।

मूल बात यह जान लो, अदल–बदल जो होय।
पहले से ही वह सभी, पूर्ण सुनिश्चित होय।। ९२।।

जब जैसा जिस वस्तु का, जो–जो होना होय।
इसमें संशय है नहीं, तब तैसा वह होय।। ९३।।

दृढ़ श्रद्धा अर ज्ञान हो, अर चरण उसी अनुसार।
होता है यह जानिये, जिनशासन अनुसार।। ९४।।

श्रमणजनों का समझिये, यह उत्कृष्ट स्वरूप।
अणुव्रतियों में भी रहे, इसका मध्यम रूप।। ९५।।

अविरत सम्यग्दृष्टि भी, मुक्तिमग के पूत।
उनमें भी रहता अरे, इसका अल्प स्वरूप।। ९६।।

श्रमण अणुव्रती अव्रती सम्यग्दृष्टि जीव।
सब शिवपंथी भव्यजन रहते रहें सदीव।। ९७।।

श्रमणजनों की भक्तिवश, अद्भुत श्रमणस्वरूप।
प्रस्तुत मैंने किया है, श्रमणों का यह रूप।। ९८।।

श्रमणजनों को समर्पित सम्यक् श्रमण स्वरूप।
पठन–मनन–चिन्तन करो, यह श्रमणों का रूप।। ९९।।

इसके ही अनुसार हो, श्रमण–श्रावकाचार।
महाश्रमण महावीर का, कहना बारम्बार।। १००।।

दशवी फाल्गुन सुदी की, सोल मार्च उन्नीस।
श्रमण शतक पूरा हुआ, नमो नमो आदीश।। १०१।।

–●–

यही है ध्यान... यही है योग...

(दोहा)

अपनेपन के साथ ही निज आतम का ज्ञान।
रमो जमो बस यही है निज आतम का ध्यान।। १।।

(रेखता)

अरे निज आतम को पहिचान आतमा में अपनापन करें।
अरे अपने आतम को जान उसी में अपनेपन से जमे।।
यही है निश्चय सम्यग्दर्श यही है निश्चय सम्यग्ज्ञान।
रतन त्रय शामिल हो जाते करो यदि इक आतम का ध्यान।। २ ।।

काय चेष्टा कुछ भी मत करो और कुछ भी ना बोलो बोल।
और ना कुछ भी सोचो भाई! एक आतम में रमो अमोल।।
यही है निश्चय सम्यग्ज्ञान यही है निश्चय सम्यक् ध्यान।
यही है परम शुद्ध उपयोग यही है अद्भुत कार्य महान।। ३ ।।

यही है परम समाधीयोग यही है परमतत्व की लब्धि।
यही है आतम की संवित्ति यही है आतम की उपलब्धि।।
यही है परम भक्ति का भाव यही है निर्विकल्प आनन्द।
यही है परम समरसीभाव यही है परमशुद्ध आनन्द।। ४ ।।

यही है परम शुद्धचारित्र यही है स्वसंवेदन ज्ञान।
यही है स्वस्वरूप उपलब्धि यही है परमशुद्ध विज्ञान।।
यही है दिव्यध्वनि का सार यही है परमतत्त्व का बोध।
जगत में इसके बिन कुछ नहीं यही एकाग्र चित्त का रोध।। ५ ।।

यही एकाग्रचित्त का रोध यही है अपनेपन का बोध।
यही है उपयोगी उपयोग यही है योगिजनों का योग।।
इसी को कहते हैं सब लोग मिला है यह अद्भुत संयोग।
स्वयं को जानो मानो जमो यही है परमतत्त्व का बोध।। ६ ।।

स्वयं को जानो, जानो नहीं जानना होने दो तुम सहज।
जानने का तनाव मत करो जानते रहो निरन्तर सहज।।
अरे करने-धरने का बोझ उतारो हो जावो तुम सहज।
जानने के तनाव से रहित जानना होने दो तुम सहज।। ७ ।।

जानना होने दो तुम सहज जानने के विकल्प से पार।
और तुम हो जावो निर्भार भाड़ में जानो दो तुम भार।।
भाड़ में जाने दो तुम भार करो तुम अपने में निर्धार[१]।
यदि बनना चाहो भगवान उन्हीं-से हो जावो निर्भार।। ८ ।।

उन्हीं-से[२] हो जावो निर्भार उन्हीं-से हो जावो निर्ग्रन्थ।
चाहते हो तुम भव का अंत शीघ्र ही छोड़ो जग का पंथ।।
सहजता जीवन का आनन्द यही है परमागम का पंथ।
चलो तुम परमागम के पंथ शीघ्र आवेगा भव का अंत।। ९ ।।

शीघ्र आवेगा भव का अन्त प्रगट होगा आनन्द अनन्त।
ज्ञान-दर्शन भी होंगे नंत वीर्य भी होगा अरे अनन्त।।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द अनन्तानन्द।
अनन्तानन्द अनन्तानन्द अरे भोगोगे काल अनन्त।। १०।।

(दोहा)

महिमा आतमध्यान की जिसका आर न पार।
आतम आतम में रमे हो जावे भव पार।। ११ ।।

---

१. सोच समझकर निश्चित करना। २. उनके समान ही।